Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III | ISSUE- XII | Dec. | 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

प्रेमचंद के रंगभूमि उपन्यास में वर्ग-संघर्ष की चेतना

प्रा. डॉ. सूर्यकांत माधवराव दळवे
हिंदी विभाग
शरदचंद्र महाविद्यालय,शिराढोण,
ता.कळंब,जि.उस्मानाबाद

भारतीय समाज व्यवस्था प्रारंभिक काल से वर्ग-व्यवस्था पर आधारित थी, जो कालांतर में बदल गई | यह व्यवस्था आजकल खत्म हो गई है | आज समाज का विभाजन अर्थ के आधार पर होता है | समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया है, पहला आर्थिक संपन्न एवं दूसरा आर्थिक रुप से विपनन इसी को अन्य नामों से संबोधित किया जा रहा है जैसे किसान व जमीनदार तथा उद्योगपति और मजदूर | इस प्रकार आज का औद्योगिक समाज दो भागों में बँटा हुआ दिखाई देता है | एक है पूँजीपति वर्ग - जिसके हाथों में आर्थिक सत्ता सिमटी हुई है | दुसरा सर्वहारा मजदूर वर्ग-जो अपने श्रम से संपत्ति तो पैदा करता है पर उसका लाभ उसे नहीं मिलता बल्कि शोषक वर्ग चाट जाता है | इन दो वर्गों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई है |

वास्तव में यही वर्ग-संघर्ष का रुप है | पूँजीवादी वर्ग अपने शोषण की वृत्ति को समाप्त करना नहीं चाहता और मजदूर वर्ग अपने अधिकारों के प्रति निरंतर जागरुक हो रहा है | प्रेमचंदजी ने इसी वर्ग-संघर्ष को अपनी कृतियों में वाणी देने का सफल प्रयास किया है | उनके उपन्यास 'रंगभूमि' में भी किसान-जमींदार एवं श्रमिक और उद्योगपति वर्ग के मध्य संघर्षों की स्पष्ट रुप रेखा दिखाई देती है |

प्रेमचंदजी ने सदैव शोषणरहित समाज की आदर्श कल्पना को अपने चिंतन का आधार बनाया था | उनके इसी जीवन - दर्शन की अभिव्यक्ति 'रंगभूमि' में सूरदास के माध्यम से हुई है | परंतु उनका यह व्यक्ति प्रतीक मात्र गांधीवादी दर्शन की उपज है, जो विभिन्न वर्गो के मध्य संघर्ष तो चाहता है | किंतु संघर्ष के साधनों की पवित्रता को भी बनाए रखना चाहता है | प्रेमचंद सदैव वर्ग-संघर्ष के स्थापन पर, वर्ग समन्वय को अंतिम उद्देश्य मानते थे | उन्होंने 'रंगभूमि' में वर्ग-संघर्ष को यथार्थ स्थिति का निरुपण करके एक नई चेतना का विकास अवश्य किया है, किन्तु प्रेमचंद का यथार्थोन्मुखी आदर्श वर्ग-समन्वय ही है न कि संघर्ष | इस संदर्भ में राजेश्वर गुरु कहते हैं - " वे वर्गों का अस्तित्त्व तो स्वीकार करते हैं, लेकिन नए समाज के निर्माण में वर्ग-संघर्ष की जरुरत नहीं मानते |" इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. इन्द्रनाथ मदान कहते हैं-" प्रेमचंद मानवता के खूनी विद्रोह से बचाने के लिए हिंसात्मक क्रांति ना करने का पूर्ण रूप से समर्थन करते है | यह एक ऐसी क्रांति है जो आत्म-चेतना और वैभव के त्याग पर अवलंबित है |"

इस प्रकार प्रेमचंदजी के चिंतन में वर्ग-संघर्ष की चेतना का रुप उदारवादी रहा | इसकी सशक्त अभिव्यक्ति हमें 'रंगभूमि' में दिखाई देवी है | वर्ग- संघर्ष की समाजवादी हिंसात्मक प्रवृत्ति के बजाय अहिंसात्मक पद्धति का प्रयोग करने के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति हुई है | प्रेमचंदजीने इसी चिंतन को सूरदस के माध्यम से अभिव्यक्त किया है | वह शोषक वर्ग के प्रति कहता है - " जिन्होंने मुझ पर जुलूम किया है, उनके दिल में दया धरम जागे|"

सूरदास की वर्ग संघर्ष की कल्पना का आधार गांधीवादी दृष्टिकोण है | इसी सिद्धांत के प्रेमचंद प्रबल समर्थक थे | प्रेमचंद वर्ग-समन्वय एवं सहयोग को अपने साहित्य का लक्ष्य मानते थे | उनके इसी समन्वयवाद के सिद्धांत की अभिव्यक्ति हमें 'रंगभूमि' में स्पष्टता दिखाई देती है | जॉनसेवक उद्योगपति वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करनेवाला पात्र है और सूरदास किसान एवं मजदूर वर्ग का | ग्रामीण जीवन में कृषि की महत्ता स्वीकार करनेवाले सूरदास का प्रारंभ में गाँव की जमीन को लेकर जॉनसेवक से संघर्ष औद्योगिकीकरणके विरुद्ध संघर्ष है | कारखाने की स्थापना हो जाती है

और औद्योगिकीकरण ग्रामीण जीवन में प्रवेश कर जाता है तो सूरदास मजदूरों की बस्ती के लिए आंदोलन का नेतृत्त्व करता है और इंद्रदत्त से उनके निवास की व्यवस्था तथा उनके जीवन-स्तर संबंधी सुविधाओं का आग्रह करता है | यहाँ सूरदास के समन्वयवादी दृष्टिकोण का ही परिचय प्राप्त हो जाता है | यह उन आंदोलनों की प्रतिछाया है, जो उस समय देश के विभिन्न राजनीतिक प्रश्नों को लेकर जनता द्वारा किए जा रहे थे| इसी दृष्टिकोन का परिचय हमें विनय के कथन से होता है | जो कि विनय क्रांतिकारी वीरपालसिंह को समझाते हुए कहते है कि-"रोग का अंत करने के लिए रोगी का अंत कर देना न बुद्धि संगत है, न न्याय- संगत, आग से आग शांत नहीं होती, पानी से शांत होती है |"

इस प्रकार प्रेमचंदजी ने क्रांतिमूलक वर्ग-संघर्ष की अवहेलना की तथा हृदय-परिवर्तन कराकर, पूँजीपति एवं जमींदार वर्ग को किसान और श्रमिकों का वास्तविक संरक्षक बनाने की ओर इंगित किया ताकि वर्ग-संघर्ष की समाप्ति हो सके, शोषक एवं पूँजीपति ट्रस्टो का निर्माण कर शोषित एवं सर्वहारा वर्ग के सच्चे सहायक और संरक्षक बन सकें |

'रंगभूमि' में भी कुछ पात्र ऐसे ही है जैसे - प्रभु सेवक, वीरपालसिंह और अंत में विनय तथा सोफियाँ भी हिंसात्मक वर्ग-संघष्र के समर्थक बनते दिखाई देते है | प्रभुसेवक कहते है -" जब तक हम खून से डरते रहेंगे, तब तक हमारे स्वप्न भी हमारे पास आने से डरते रहेंगे |" प्रेमचंद मानते थे कि पशुबल से ही अत्याचारी में मनुष्यता जाग सकती है | इसलिए वे 'रंगभूमि' उपन्यास में कहते है - " हमने लाचार होकर इस हत्या मार्ग पर पग रखा है | किसी तरह से इन दुष्टों की आँखे खुले | ये पशु से मनुष्य हो जाएँ |" इस प्रकार प्रेमचंदजी की चिंतन-प्रणाली में क्रांतिमूलक विचारों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है, वह क्षणिक है | उनका जीवन-चिंतन तो वर्ग सहयोग व समन्वय पर आधारित है | जो हमें सूरदास के माध्यम से स्पष्ट परिलक्षित होता है | सूरदास का संघर्ष पूँजीपति व जमींदारों से हैं जो अहिंसात्मक है तथा सिद्धांतों पर आधारित संघर्ष है |

वास्तव में वर्ग-संघर्ष की मूलचेतना का प्रारंभ पाश्चात्य जगत में हुआ था | साम्यवादी एवं समाजवादी देशों में मजदूर वर्ग को सत्ता का वास्तविक अधिकार माना गया है क्योंकि वही संपत्ति का सही उत्पादक है | उसकी उत्पादित संपत्ति पर शोषण के द्वारा बलात अधिकार करनेवाले पूँजीपतियों का विनाश साम्यवाद का इष्ट है | गांधीवादी-चिंतन का उद्देश्य भी शोषण को रोकना है तथा मजदूरों को उनका हक दिलाना है पर उनके साधन के रुप में गांधीवाद हिंसा को स्वीकार नहीं करता बल्कि हृदय-परिवर्तन को स्वीकार करता है | प्रेमचंद के 'रंगभूमि' में गांधीवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है |

अंतत: कहा जा सकता है कि प्रेमचंदजी के 'रंगभूमि' उपन्यास में वर्ग-संघर्ष की चेतना कुट कुटकर भरी हुई दिखाई देती है | जिसके लिए प्रेमचंदजी प्रख्यात है |

संदर्भ संकेत :

१. प्रेमचंद एक अध्ययन - डॉ. राजेश्वर गुरु
२. प्रेमचंद एक विवेचन - डॉ. मदन
३. रंगभूमिक - प्रेमचंद